डा. राजीव कुमार,
इतिहास विभाग,
एच. डी. जैन कॉलेज, आरा

यूरोप (1789–1919) में नई सामाजिक वर्ग व्यवस्था - बुर्जुआजी, सर्वहरा वर्ग और किसान वर्ग।

New social classes - Bourgeoisie , proletariat and peasantry.

---

1. भूमिका (Introduction)

1789 से 1919 का काल यूरोप के इतिहास में गहरे सामाजिक, आर्थिक और राजनीतिक परिवर्तन का युग रहा। इस अवधि में फ्रांसीसी क्रांति (1789), औद्योगिक क्रांति, राष्ट्र-राज्य निर्माण, पूंजीवाद का विस्तार, और अंततः प्रथम विश्व युद्ध (1914–1919) जैसी घटनाओं ने पारंपरिक सामंती समाज को तोड़कर नई सामाजिक वर्ग-व्यवस्था को जन्म दिया।
इस काल में समाज मुख्यतः तीन नए वर्गों में विभाजित हुआ—

बुर्जुआजी (Bourgeoisie),
सर्वहारा / मजदूर वर्ग (Proletariat),
किसान वर्ग (Peasantry),

ये वर्ग केवल आर्थिक नहीं बल्कि राजनीतिक, वैचारिक और सामाजिक संघर्षों के भी केंद्र बने।

2. फ्रांसीसी क्रांति और सामाजिक संरचना में परिवर्तन

(i) सामंती व्यवस्था का पहन :
1789 से पहले यूरोप, विशेषकर फ्रांस में समाज तीन एस्टेट्स में बंटा था—
प्रथम एस्टेट: पादरी
द्वितीय एस्टेट: कुलीन वर्ग
तृतीय एस्टेट: सामान्य जनता

फ्रांसीसी क्रांति ने—
विशेषाधिकारों का उन्मूलन,
समानता और नागरिक अधिकारों की स्थापना,
कानूनी समानता,
जैसे सिद्धांतों के माध्यम से पुराने सामाजिक ढांचे को तोड़ दिया।

(ii) नए वर्गों का उदय :
क्रांति के बाद धन, उत्पादन और श्रम सामाजिक विभाजन के नए आधार बने, जिससे बुर्जुआजी, सर्वहारा और किसान वर्ग स्पष्ट रूप से उभरे।

3. बुर्जुआजी (Bourgeoisie)
(i) अर्थ और उत्पत्ति
बुर्जुआजी वह वर्ग था जो— व्यापार, उद्योग, बैंकिंग एवं
पूंजी निवेश से जुड़ा था। औद्योगिक क्रांति ने इसे आर्थिक रूप से सबसे शक्तिशाली वर्ग बना दिया।

(ii) बुर्जुआजी का विकास
1789–1919 के बीच—
कारखानों का विस्तार, रेलवे और बैंकिंग प्रणाली, उपनिवेशों से कच्चे माल की आपूर्ति आदि ने बुर्जुआ वर्ग को मजबूत किया।

(iii) राजनीतिक भूमिका
फ्रांसीसी क्रांति में नेतृत्व,
उदारवाद (Liberalism) और संविधानवाद का समर्थन किया तथा
संसद और मताधिकार की मांग की।

(iv) सामाजिक स्थिति
बुर्जुआजी ने—
कुलीन संस्कृति का अनुकरण किया। शिक्षा, शहरी जीवन और निजी संपत्ति को महत्व दिया।

(v) आलोचना
कार्ल मार्क्स के अनुसार—
“बुर्जुआजी उत्पादन के साधनों पर नियंत्रण रखती है और श्रमिक वर्ग का शोषण करती है।”

4. सर्वहारा वर्ग (Proletariat)
(i) परिभाषा
सर्वहारा वर्ग वह था—
जिसके पास उत्पादन के साधन नहीं थे।
जो अपनी श्रम-शक्ति मजदूरी पर बेचता था।
यह वर्ग औद्योगिक क्रांति की प्रत्यक्ष उपज थी।

(ii) उद्भव
ग्रामीण क्षेत्रों से शहरों की ओर पलायन

कारखानों में काम
लंबे कार्य घंटे, कम मजदूरी

(iii) जीवन-स्थितियाँ
झुग्गी बस्तियाँ
अस्वास्थ्यकर वातावरण
बाल और महिला श्रम

(iv) वर्ग चेतना का विकास
19वीं सदी में—
ट्रेड यूनियन आंदोलन
हड़तालें
समाजवाद और साम्यवाद का प्रसार
मार्क्स और एंगेल्स की कम्युनिस्ट मेनिफेस्टो (1848) ने वर्ग संघर्ष की धारणा को लोकप्रिय बनाया।

(v) राजनीतिक भूमिका
1848 की क्रांतियाँ
समाजवादी दलों की स्थापना
1917 की रूसी क्रांति में निर्णायक भूमिका

5. किसान वर्ग (Peasantry)
(i) स्थिति और स्वरूप
यूरोप में बहुसंख्यक आबादी किसान थी, विशेषकर—
फ्रांस
रूस
पूर्वी यूरोप

(ii) फ्रांसीसी क्रांति के बाद
सामंती करों का अंत
भूमि स्वामित्व का विस्तार
फ्रांस में किसान अपेक्षाकृत संतुष्ट हुए।

(iii) पूर्वी यूरोप और रूस
जमींदारी और सर्फडम बना रहा
रूस में 1861 में सर्फडम समाप्त हुआ

(iv) आर्थिक समस्याएँ

छोटे जोत
कर्ज
बाजार पर निर्भरता

(v) राजनीतिक भूमिका
किसान विद्रोह
रूस में समाजवादी क्रांति का आधार
1917 की रूसी क्रांति में भागीदारी

6. वर्ग संघर्ष और विचारधाराएँ
(i) उदारवाद
बुर्जुआ वर्ग की विचारधारा
निजी संपत्ति और स्वतंत्र बाजार का समर्थन
(ii) समाजवाद
श्रमिक और किसानों के हित
राज्य हस्तक्षेप और समानता
(iii) साम्यवाद
वर्गहीन समाज का सपना
निजी संपत्ति का उन्मूलन
(iv) राष्ट्रवाद
सभी वर्गों को जोड़ने वाला तत्व
लेकिन वर्गीय तनाव बना रहा

7. प्रथम विश्व युद्ध और सामाजिक वर्ग

(i) युद्ध का प्रभाव
मजदूरों का सैन्यीकरण
किसानों पर कर और उत्पादन का दबाव
बुर्जुआजी को युद्ध उद्योग से लाभ

(ii) युद्धोत्तर परिवर्तन
मजदूर वर्ग की राजनीतिक शक्ति बढ़ी
महिलाओं और श्रमिकों को मताधिकार
समाजवादी आंदोलनों में तेजी

8. निष्कर्ष (Conclusion)

1789 से 1919 के बीच यूरोप में सामाजिक संरचना का मूलभूत पुनर्गठन हुआ।
बुर्जुआजी आर्थिक और राजनीतिक शक्ति का केंद्र बनी
सर्वहारा वर्ग शोषण से संघर्ष और क्रांति की ओर बढ़ा
किसान वर्ग परंपरा और परिवर्तन के बीच झूलता रहा
इन तीनों वर्गों के पारस्परिक संबंधों और संघर्षों ने आधुनिक यूरोप की नींव रखी और 20वीं सदी की राजनीति को दिशा दी।